KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY

Website: www.kgcollege.ac.in Phone: 0481 2505212 Email: mail@kgcollege.ac.in

3.3.2 BOOKS AND CHAPTERS

2019-20		
SL NO	**NAME OF AUTHOR**	**BOOK**
1	Dr A Priya	Kopale
2	Dr A Priya	Chayavar
3	Dr A Priya	Pravasi Hindi Sahitya Samvedana Ke Vividh Sandarbh
4	Dr A Priya	Hindi Lakhukatha Ke Vividh Ayaam
5	Dr A Priya	Sampradayikatha, Dharmanirapekshatha Evam Sahithya
6	Dr A Priya	Hindi Sahitya Ke Vividh Ayaam
7	Dr A Priya	Bharateey Sahitya Ki Chintan Bhoomi
8	Dr A Priya	Bakthi Sahithya Ki Prasangikatha
9	Dr Anoop K R	Malayala Novel Sahithyamala

Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

कोंपलें

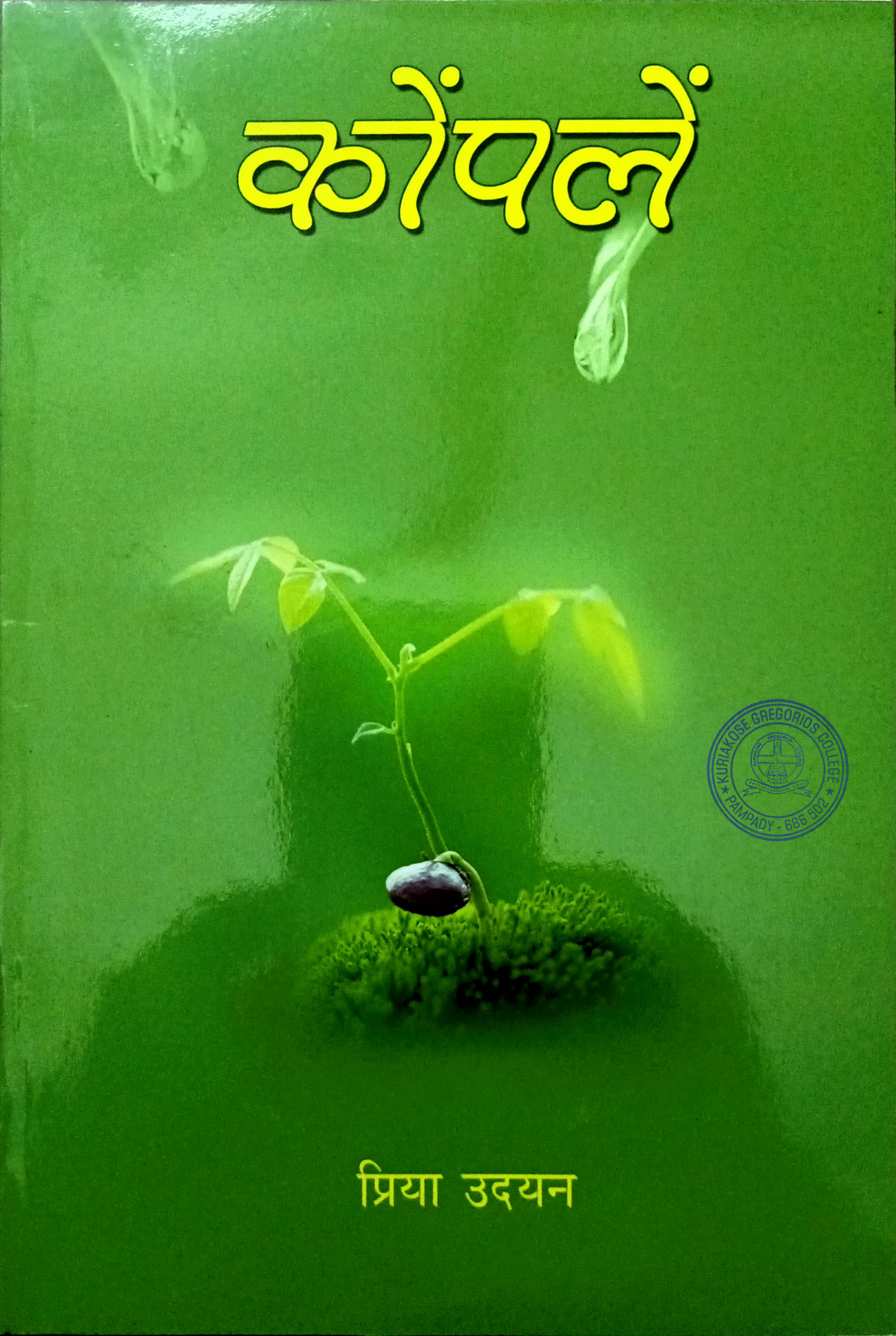

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

प्रिया उदयन

नाम : प्रिया उदयन

जन्म : 13 जुलाई, 1977 को केरल के एरणाकुलम जिले में पेरुम्बावूर नामक जगह

शैक्षिक योग्यता : एम.ए. (महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम), पीएच.डी (कोच्चिन विश्वविद्यालय), बि.एड. (महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, शाखा - मुवाट्टुपुषा)

संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कुरियाकोस ग्रिगोरियोस कॉलेज, पाम्पाडी
कोट्टयम जिला, केरल, पिन - 686 502

अकादमिक योग्यताएँ : राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में पच्चास से अधिक प्रपत्र प्रस्तुती
ISSN और ISBN युक्त शोध पत्र-पत्रिकाओं में पच्चास से अधिक आलेख प्रकाशित, मलयालम से हिन्दी में अनूदित कविताएँ प्रकाशित
भारतीय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद की आजीवन सदस्य
अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन, अलीगढ़ की आजीवन सदस्य
जनविकल्प - तृश्शूर की आजीवन सदस्य

संपर्क : लक्ष्मी निवास, मरुत रोड़, पेरुम्बावूर पि.ओ.
एरणाकुलम जिला, केरल-683 542

ईमेल : priyauday111@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

माला प्रकाशन

978-93-83509-16-4

कोंपलें

प्रिया उदयन

2019

माला प्रकाशन

दिल्ली/अलीगढ़

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

'कोंपलें'

(काव्य-संग्रह)

ISBN : 978-93-83509-16-4

© कवयित्री

आवरण परिकल्पना : कृष्णप्रिया डिसाइन

प्रथम संस्करण : 2019

कंप्यूटर कंपोजीशन : श्री उदयन

प्रकाशक :

म ा ल ा प्रकाशन

A-2, समी एपार्टमेंट, दोधपुर

अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

✆ : 0571-2705555, 8791150515

मुद्रक : इन्दु ओफसेट प्रेस, कलमश्शेरी

मूल्य : रु.75/-

KOMPALEN

Poems by Priya Udayan

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

छायावाद : संस्मृति एवं पुनर्पाठ

डॉ. सुप्रिया सिंह

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY 686 502

सेंट क्लॉरिट महाविद्यालय

सेंट क्लॉरिट महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 2005 में क्लॉरिटाइन मिशनरी द्वारा बेंगलुरु में की गई। क्लॉरिटाइन मिशनरी कैथोलिक बौद्धिक परंपराओं का अनुपालन करती है। यह संस्था अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 66 देशों में स्थापित 2 विश्वविद्यालयों एवं 150 शैक्षणिक संस्थाओं का संचालन करती है। सेंट क्लॉरिट महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यहाँ विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, मानविकी एवं कला आदि विषयों में उच्चशिक्षा प्रदान की जाती है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

₹595/-
ISBN 978-81-89187-86-6
9 788189 187866 >

विनय प्रकाशन
3ए-128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903
Email - vinayprakashankanpur@gmail.com
visit us at : www.vinayprakashan.com

17

सुमित्रानंदन पंत की कविता में प्रकृति

डॉ प्रिया ए.

सुमित्रानंदन पंत छायावादी धारा के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। उनकी संपूर्ण काव्य रचनाएँ अपने–आप में एक दूसरे ही स्तर पर अध्ययन की माँग करती हैं। पंत की अपने काव्य बोध और जीवन के वस्तुगत सत्यों के प्रति तटस्थ, ईमानदार और उत्तरदायित्व पूर्ण दृष्टि रही हैं। अपने काव्य जगत् के माध्यम से उन्होंने जीवन के प्रति एक निर्वैयक्तिक धारणा को अर्जित एवं अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। ऐसी जीवन दृष्टि की खोज ही उन्हें स्वच्छन्दतावादी धारा से जोड़ती है। पंत जी की कविता में अपने भीतर छिपे सत्य का उद्‌घाटन या बाह्य जगत् का यथावत् वर्णन मिलता है। अपनी कविताओं में पारिस्थितिक बोध से वे विस्मय भाव को जागृत करते हैं। कविता में निहित विस्मय भाव की अनुगूँज ही समकालीन समय में भी उनकी रचनाओं को प्रासंगिक बना देती है।

सुमित्रानंदन पंत प्रकृति सौंदर्य के अमर गायक हैं। उनके काव्य सृजन की प्रेरणा ही प्रकृति है। वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन जैसे प्रारम्भिक रचनाओं में कवि को प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम का दिग्दर्शन है। प्रकृति का काल्पनिक तथा मनोरम चित्र भी पंत के काव्य में उपस्थित हैं। यह छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता भी रही है। 'सन्ध्या' शीर्षक कविता में सुन्दर कल्पनाओं के माध्यम से प्रकृति का रमणीय चित्र कवि इस प्रकार खींचते हैं–

"कहो तुम रूप–सी कौन ?
व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया छवि में आप,
सुनहला फैला केश कलाप
मधुर, मंथर, मृदु मौन।"[1]

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

पंतजी के प्रकृति चित्रण में प्रकृति हर कहीं व्याप्त है। इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति को जिज्ञासा, आत्मीयता तथा रागात्मक वृत्तियों के सहारे देखा था। पंत का प्रकृति चित्रण आत्मीय भावनाओं से भरा हुआ है। प्रकृति के जीवन रहस्य का व्यापक दर्शन उनकी कविता में भरा हुआ है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य
संवेदना के विविध संदर्भ

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक
डॉ. प्रतिभा मुदलियार

डॉ. प्रतिभा मुदलियार

जन्म : 8/12/1959, बेलगांव, कर्नाटक

अर्हता : एम. ए. (हिंदी) वर्ष 1984 कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़, कर्नाटक; पी-एच. डी. (नरेश मेहता के काव्य का अनुशिलन) वर्ष 1990 कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़, कर्नाटक; डी.लिट्. (बीसवीं सदी के प्रबंध काव्यों का सांस्कृतिक चेतना) वर्ष 2000 दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास; डिप्लोमा इन ट्रान्सलेशन (अंग्रेजी-हिंदी) वर्ष 1984 कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़, कर्नाटक

अध्यापन : कुल 29 वर्ष का अद्यापन; 1984 से 1999 तक बी. के. कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड साइन्स, बेलगाँव, कर्नाटक में सेवा प्रदान; 1999 से अबतक मैसूर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अद्यापन; हांकुक युनिर्वसीटी ऑफ फोरन स्टडिज, साउथ कोरिया में वर्ष 2005 से 2008 तक अतिथि हिंदी प्रोफेसर के रुप में कार्यरत।

पुरस्कार : राष्ट्रीय पुरस्कार-वर्ष 1996 (नाच ग घूमा पुस्तक के लिए), सारस्वत सम्मान-वर्ष 2001, हिंदी मार्तंड : वर्ष 2002, लाल बाहदुर शास्त्री सम्मान (2012), वीरांगना सावित्री बाई फूले सम्मान (2013), हिंदी रत्न- भारतीय भाषा परिषद (2014), पूरणचंद रिद्धिलता लुहाडिय पुरस्कार (2014), महात्मा गाँधी पुरस्कार, बेंगलुर विश्वविद्यालय, बेंगलुर (2016), कवडे अंदाल पुरस्कार, ऑल इंडिया कवयित्री सम्मेलन, चडीगढ (2017), नारी उज्जागरण पुरस्कार, ऑल इंडिया कवयित्री सम्मेलन, चडीगढ (2017)

प्रकाशित पुस्तकें : नाच ग घूमा (मराठी आत्मकथा का अनुवाद) 1994, नरेश मेहता के काव्य का अनुशीलन (समीक्षा) 1997, नदी संगे वाहताना (कन्नड कविताओं का हिंदी अनुवाद) 2002, क्षण हवे नको ते(हिंदी उपन्यास का मराठी अनुवाद) 2002, खंड खंड अग्नि (हिंदी काव्य नाटक का मराठी अनुवाद) 2003, लेख और आलेख (समीक्षा) 2004, हाशिए पर (कविता संग्रह) 2005, हिंदी वार्तालाप (विदेशी छात्रों के लिए व्यावहारिक हिंदी पर पुस्तक) 2008, हिंदी पत्रकारिता 2009, बदामी चालूक्य तथा बाहुबली (अनुवाद- अंग्रेजी-हिंदी) -2014, साई की जीवनी पर आधारित मराठी उपन्यास का हिंदी अनुवाद - 2014, स्त्री विमर्श और समकालीन संदर्भ 2017

संपादित पुस्तकें : कविता तरंग, साहित्य सोपान, कविता कहानी कलश, साहित्य सप्तक

- स्वरचित कविता, कहानियाँ, अनुवाद, सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार आदि हिंदी तथा मराठी की कई पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित; कई विश्वविद्यालयों के पाठ्य सामग्री निर्माण लेखन में सक्रिय सहभागिता; कई राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में विशेषज्ञ के रुप में भाषण तथा आलेख प्रस्तुति; कई राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख प्रकाशित; कर्नाटक तथा कर्नाटक के बाहर के कई विश्वविद्यालयों के अध्ययन मंडली तथा परीक्षा मंडली की सदस्यता : कई विश्वविद्यालयों के नियुक्ति मंडली की सदस्यता, के.पी. एस. सी की नियुक्ति मंडली में सदस्यता, के सेट तथा नेट के परीक्षा मंडली में सदस्यत्व, राष्ट्रीय तथा अतंराष्ट्रीय संगोष्ठी तथा हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

संप्रति : प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर 570006

दूरभाष : (कार्यालय) 0821-419619 (निवास) 0821-2415498, मोबाईल : 9844119370

ईमेल : mudliar_pratibha@yahoo.co.in

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

अप्र

अमन प्रकाशन

104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)

मोबाइल : 8090453647, 9839218516

फोन : 0512-2543480

ईमेल : amanprakashan0512@gmail.com

वेबसाइट : www.amanprakashan.com

₹ 825/-

ISBN : 978-93-88260-88-6

52.

डॉ. पद्मेश गुप्त की कविता में साहित्यिक-सांस्कृतिक संवेदना के आयाम

- डॉ. प्रिया ए.

भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं। उन्होंने विदेशी राज्यों को अपनी कर्मभूमि बनाया है। बीसवीं शती में प्रवासी भारतियों ने भारतीय अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है। भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है और जिन्होंने हिंदी को केंद्र में रखकर या माध्यम बनाकर या हिंदी में लिखा है वे प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं। अपने जड़ों से बिछुड़कर नयी राह बनानेवालों का साहित्य ही प्रवासी साहित्य है।

प्रवासी साहित्य और उसके उद्‌भव एवं विकास की शुरूआत 1990 के दशक से हुई। हिंदी के प्रतिभाशाली लेखकों की कतार ब्रिटेन से निकली। पद्मेश गुप्त ने ब्रिटेन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत प्रयत्न किया था। वे मूलत: लखनवी हैं। वे प्रवासी साहित्य आंदोलन सूत्रधारों में प्रमुख शख्स हैं। पद्मेश गुप्त के संपादन में यू.के. के पच्चीस कवियों व कवयित्रियों का पहला संकलन 'दूर बाग में सोंधी मिट्टी' 1997 में प्रकाशित हुआ। उनकी सक्रियता में ही हिंदी समिति की सक्रियता राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी। उनके संपादन में 'पुरवाई' का प्रकाशन शुरू हुआ। 1999 में उन्हीं के संयोजन में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। उन्होंने प्रवासी साहित्य के लेखन और प्रकाशन में महत्वपूर्ण अवदान दिए हैं। उनकी रचनाएँ साहित्यिक-सांस्कृतिक संवेदना के आयामों से संपन्न हैं। 2017 में प्रकाशित उनके काव्य संकलन का नाम है - प्रवासीपुत्र। इस संकलन में प्रवासी एवं प्रवास की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है।

'प्रवासी पुत्र' नामक इस संकलन की पहली कविता इसी शीर्षक से लिखी गयी है। वे भारत माता के पुत्र होने के कारण भारतीय संस्कृति एवं भारतीय भाषाओं को पश्चिमी देशों में प्रचार-प्रसार करने के लिए सतत् प्रयत्न कर रहे हैं। जन्म भूमि एवं अपने माता-पिता परिवार के पूर्ण दायित्व, जिम्मेदारी जैसे भाव निरंतर उनकी कविता

... COLLEGE PAMPADY - 686 502

हिंदी लघुकथा के विविध आयाम

(प्रयोजनमूलक हिंदी तथा हिंदी में रोजगार के अवसर)

संपादक मंडल अध्यक्ष
डॉ. आफ़ताब अनवर शेख

कार्यकारी संपादक
डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर
डॉ. बाबा शेख

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

हिंदी लघुकथा के विविध आयाम

(प्रयोजनमूलक हिंदी तथा हिंदी में रोजगार के अवसर)

संपादक मंडल अध्यक्ष

प्रोफेसर डॉ. आफताब अनवर शेख

एम.कॉम., एम.बी.ए., पी-एच्.डी. प्राचार्य, पूना कॉलेज, कैम्प, पुणे 411001.

dranwarshaikh@gmail.com, 9822621579

उपलब्धियाँ - सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के सिनेट मेंबर (महाराष्ट्र शासन द्वारा नाम निर्देशित), सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के अध्ययन मंडल सदस्य, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय परीक्षा समिति के पूर्व सदस्य, इंडोग्लोबल चेंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एन्ड एग्रीकल्चर, पुणे के अध्यक्ष, युवाकार्य एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार दवारा राष्ट्रीय युवा सम्मानार्थी

पी-एच.डी., एम.फिल मार्गदर्शन-पी.एच्.डी के 28 छात्र तथा एम.फिल के 16 छात्रों ने पदवी प्राप्त की

प्रकाशन- कई ग्रंथों का प्रकाशन, संपादन तथा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में अनेक शोधालेख प्रकाशित, विदेश यात्रा -चीन, ईरान, मलेशिया, थायलैंड, सिंगापूर, ओमान, यु.ए.ई. (दुबई, अबुधाबी, सौदी अरेबिया), फिजी, किंगडमऑफ टोंगा, श्रीलंगा तथा नेपाल की यात्रा

पुरस्कार, सम्मान, उपलब्धियाँ - विभिन्न संस्थाओं, भारत सरकार, महाराष्ट्र शासन, नेहरू युवाकेंद्र, पुणे विश्वविद्यालय आदि से लगभग 27 पुरस्कारों से सम्मानित

कार्यकारी संपादक

डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर

एम.ए., बी.एड्., पी-एच्.डी., नेट, सेट, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, एन.सी.सी. के अरटेकर ऑफिसर,

पूर्व विद्यार्थी विकास अधिकारी, पूर्व एन.एस.एस कार्यक्रम अधिकारी, पूना कॉलेज, कैम्प, पुणे 411001.

drshakirpune@gmail.com, 09423017017

प्रकाशन- 'कर्मयोगी स्वामी विवेकानंद' ग्रंथ 2002 में प्रकाशित, 'सावित्रीबाईफुले' ग्रंथ 2004 में प्रकाशित, 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में समसामयिक बोध ग्रंथ 2011 में प्रकाशित

संपादन कार्य- 'वाग्धारा' राष्ट्रीय हिंदी सेवी महासंघ की पत्रिका का 2010 में संपादन, 'हिंदी साहित्य में नैतिक मूल्य ग्रंथ का 2013 में संपादन, 'हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श' 2014 ग्रंथ का संपादन, 'हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श 'इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में 2015 ग्रंथ का संपादन, 'हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव' ग्रंथ का संपादन

शोध आलेख प्रकाशन- विभिन्न अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय संगोष्ठियों में 28 शोध आलेख प्रकाशित

पुरस्कार, सम्मान, उपलब्धियाँ - विभिन्न संस्थाओं, महाराष्ट्र शासन, नेहरू युवाकेंद्र, पुणे विश्वविद्यालय आदि से 16 पुरस्कार प्राप्त

डॉ. बाबा शेख

एम.ए., पी-एच्.डी., असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विद्यार्थी विकास अधिकारी, पूना कॉलेज, कैम्प, पुणे 411001.

drbabashaikh@gmail.com, 09423717111

प्रकाशन : 'मुस्लिम समाज जीवन और अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास' ग्रंथ 2012 में प्रकाशित

संपादन कार्य : 'वाग्धारा' राष्ट्रीय हिंदी सेवी महासंघ की पत्रिका का 2010 में संपादन, 'हिंदी साहित्य में नैतिक मूल्य' ग्रंथ का 2013 में संपादन, 'हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श' 2014 ग्रंथ का संपादन, 'हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श' इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में 2015 ग्रंथ का संपादन, 'हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव' ग्रंथ का संपादन

शोध आलेख प्रकाशन- विभिन्न अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय संगोष्ठियों में 20 शोध आलेख प्रकाशित

पुरस्कार, सम्मान, उपलब्धियाँ - विभिन्न संस्थाओं से 4 पुरस्कार प्राप्त

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

इण्टरनेशनल पब्लिकेशन

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

6ए/540 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -21

Email : internationalpub09@yahoo.com

Website : www.internationalpublication.in

ISBN 978-93-87556-56-0

9 789387 556560

₹ 995/-

81

कैलाश बनवासी की कहानी में बदलते गाँव एवं किसानी संस्कृति का परिवेश

डॉ.प्रिया ए.

गाँव भारतीय अस्मिता की आत्मा है, भारत भूमि का अधिकाँश भाग गाँव है तथा बहुमत भारतीय गाँवों में रहते हैं। हमारी आर्थिक, साँस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक स्थितियों के रूपायन में गाँवों की अहम् भूमिका है। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी एवं नई तकनीकी के प्रभाव में आकर गाँव की संस्कृति, सभ्यता एवं स्वरूप बदल गया है। अब गाँव नहीं रहे और जनता शहरी सभ्यता के आदी हो गयी। इसके फलस्वरूप गाँव के कुटीर उद्योग, खेती, बोली, भाषा, पर्व-त्योहार, रहन-सहन, वेशभूषा, भोजन तक मिटने लगे हैं। इसप्रकार उत्तराधुनिक समय में गाँव की परिकल्पना एवं संरचनात्मक स्वरूप पूर्णरूप से बदल गए हैं।भूमंडलीकरण के इस युग में भारतीय गाँवों की दशा खतरे में है। साम्राज्यवादी कुतंत्रों के कारण मुनाफावादी दृष्टिकोण ही सब कहीं विद्यमान है। इसलिए मानवीय मूल्य गिर रहे हैं, घट रहे हैं। ऐसे साम्राज्यवादी ताकतों का नतीजा है - गाँव की बरबादी के साथ उससे जुड़ी कृषक संस्कृति की बदहाली। पहले पहल भारत के किसान अपनी ज़मीन में बीज बोते थे, फसल उगाते थे, और अपने ढ़ंग से खाद का भी उपयोग करते थे। पर आजकल बहुराष्ट्र कंपनियाँ सब कुछ तय करती हैं। सरकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शर्तों के ज़रिए किसानों को लूटने की सहायता दे रही है। इस प्रकार तकनीकी विकास के नाम पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को मुनाफा मिलता है और किसान अपनी ज़मीन और मिट्टी से बेदखल होने के लिए अभिशप्त बनते हैं।

औद्योगीकरण, बाज़ारीकरण, नव उदारवाद तथा निजीकरण के षड्यंत्रों से गाँव एवं कृषि को बरबाद कर देने का प्रयास जारी है। किसानवर्ग के ऐसे जीवन यथार्थ को, उनकी विवशता को समकालीन कहानीकार कैलाश बनवासी अपनी कहानी के ज़रिए अभिव्यक्त करते हैं। अपसंस्कृतियों के पनपने के कारण हमारे देश से धीरे-धीरे कृषि संस्कृति नष्ट होती जा रही है। कैलाश बनवासी ने 'एक गाँव फुलझर' में इस तथ्य को दर्शाया है।

प्रस्तुत कहानी में करोड़पति छत्रपाल गुप्ता अपने फायदे के लिए अपनी ज़मीन में प्लास्टिक उद्योग की फैक्टरी खोलने का निर्णय लेता है, इस कार्य में प्रारंभिक तौर पर धरती को रौंदा जाता है। गुप्ताजी की इस चालबाज़ी में सरपंच और वहाँ के सबसे धनी किसान कालीराम भी साथ देते हैं। कालीराम एक ऐसा पूँजीवादी किसान था जबकि बाकी किसानों के पास ज़मीन के एक या दो टुकडे थे। पाठकों के सामने दो प्रकार के आदमी उपस्थित होते हैं - एक जो खेत पर काम नहीं करता लेकिन जिसके पास सैकडों एकड़ ज़मीन है, दूसरा वह जो सब करता है लेकिन जिसके पास भूमि नहीं है। आज दृष्टि यह बनी हुई है कि एक ऐसे व्यक्ति को, जिसके पास सैकडों हज़ारों एकड़ ज़मीन है लेकिन जो खेती में कोई काम नहीं करता, हम किसान मानते हैं। लेकिन उस व्यक्ति को जो खेती में सारा कामकाज करता है किसान नहीं मानते, मजदूर कहते हैं। "परिणाम यह हुआ कि यहाँ के बाशिन्दे न पूरी तरह किसान हैं न पूरी तरह मजदूर। आजकल के

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY 686 502

साम्प्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता एवं साहित्य

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686

सम्पादक
पी. रवि
वी.जी. गोपालकृष्णन

सांप्रदायिकता विरोध में लिखे जाने वाला साहित्य बाबरी मस्जिद ध्वंस के बाद एक नया मोड़ लेता है। यह ऐसी घटना थी जिसने हिन्दी ही नहीं दूसरी भारतीय भाषा के लेखको को भी हिला कर रख दिया था। दरअसल यह घटना भारतीय सौहार्द, सहिष्णुता, सद्भावना, मिली-जुली संस्कृति की उपलब्धियों, लोकतंत्र की गरिमा, धार्मिक आख्याओं ओर विश्वासों पर इतना बड़ा हमला था कि उसने बुद्धिजीवियों और जनमानस को विचलित कर दिया था। देश के बँटवारे के बाद शायद बाबरी मस्जिद ध्वंस ही ऐसी घटना थी जिस पर लेखकों और कवियों ने बड़ी संख्या में रचनाएँ लिखी थीं। इन रचनाओं में क्षोभ और आक्रामकता के स्वरों के साथ- साथ ग्लानि का स्वर भी प्रमुख रूप से सामने आता है। इस संदर्भ में पहली बार रचनाओं में आक्रोश के स्वर बहुत उग्र रूप में मुखरित हुए हैं। सांप्रदायिक शक्तियों का कड़ा विरोध और ध्वंस से हुए नुकसान को न पूरी होने वाली क्षति के रूप में सामने रखा है।

सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता एवं साहित्य में सांप्रदायिकता का सैद्धांतिक विवेचन, उनका ऐतिहासिक विकास क्रम तथा साहित्य पर उसका प्रभाव आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। सांप्रदायिकता के विरोध की साहित्यिक अभिव्यक्ति पर भी इसमें विचार किया गया है। युगीन संदर्भो के अनुसार साहित्यित प्रतिरोध की मान्यताएँ भी बदली हैं, प्रतिरोध का रूप भी बदला है। सांप्रदायिकता के प्रतिरोध के वदले हुए रूप को इस पुस्तक मे आंकने का प्रयास किया गया है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY-686 502

ISBN 978-93-87145-87-0
9789387145870

अनन्य प्रकाशन
prakashananananya@gmail.com

समकालीन कविता में सांप्रदायिक विकलता का परिदृश्य

प्रिया ए.

मानवीय रिश्तों की संकीर्णता का परिणाम है - सांप्रदायिकता एवं सांप्रदायिकता का विध्वंसात्मक परिवेश। भारतीय राष्ट्र राज्य के सामने आज सांप्रदायिकता सबसे विकट एवं ज्वलंत समस्या बन उठ खड़ी है। सांप्रदायिकता हमारी एकता और संपूर्णता को खंडित करने की हालत तक पहुँच गई है। देश के विभाजन के दौरान 1946-47 में जिस सांप्रदायिकता ने विष-बेल बोया था उसी में गाँधीजी की चिता जलकर राख हो गई। सांप्रदायिकता का संबन्ध किसी भी धर्म से नहीं है। केवल लाभ-लोभकारी कूट राजनीति से ही इसका संबन्ध है। ऐसी मुखौटाधर्मी राजनीति की नींव क्रूरता के तत्व पर आधारित है। इसका गलत परिणाम यही निकलता है कि राजनीतिकता और आर्थिकता से लेकर सामाजिक और सांस्कृतिक इरादों की सफलता के लिए लोगों को सिर्फ धर्म के धागे से बाँधा जाता है। धर्म से परे इन मामलों में राजनीति की भूमिका अधिक है। इसी विश्वास से सांप्रदायिक विचारधारा का जन्म हुआ और इसकी वजह से धर्मधारी समाज के लोगों के धर्मेतर हितों को भी अलग-अलग बाँटकर देखा जाने लगा। 19वीं सदी के अंत में पनपी यह विचारधारा झूठ, घृणा और हिंसा के तत्व पर आधारित रही। इससे समाज में बर्बरता का दौर भी शुरु हुआ।

मैं श्रेष्ठ दूसरा निकृष्ट, यह भाव हमारे सामाजिक विघटन का मूल कारण बनता है। क्योंकि इस विद्रूपात्मक माहौल से ही आपसी सामाजिक रिश्ते टूट जाते हैं। परस्पर शंका एवं अविश्वास के बढ़ने से सामाजिक विभाजन तीव्र हो जाता है। फलस्वरूप अलग-अलग धर्मों के माननेवालों की बस्तियाँ एक-दूसरे से अलग-अलग होने लगती हैं। यह पृथकता कई आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कारणों से जुड़कर देश के टूटन का कारण बन जाती है। इस प्रकार भारत में आज धर्मनिरपेक्षता का अर्थ हुआ - सांप्रदायिकता का निषेध। ऐसे मनुष्य विरोधी निषेधात्मक माहौल में कविता

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

तमसो मा ज्योतिर्गमय

हिन्दी भाषा, साहित्य एवं
भारतीय संस्कृति: वैश्विक परिदृश्य

हिन्दी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल, डॉ. डी. विद्याधर, डॉ. सुषमा देवी
डॉ. डी. जयप्रदा, डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य

हिंदी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल, डॉ.डी.विद्याधर, डॉ.सुषमा देवी, डॉ.डी.जयप्रदा, डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

प्रकाशक

मिलिन्द प्रकाशन

4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग

हनुमान व्यायामशाला की गली

सुल्तान बाजार

हैदराबाद -500095

फोन : 24753737 / 32912529

अक्षर संयोजक

डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

7386578657

आवरण

वी.डिजाइन

फोन : 98855 06088

प्रथम संस्करण

2019

मूल्य

रु.825/-

(रुपये आठ सौ पच्चीस मात्र)

ISBN : 978-81-905891-5-5

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

HINDI SAHITYA KE VIVIDH AYAM : VAISHVIK PARIDRISHYA

Editors

Rajesh Agrawal, Dr.D.Vidyadhar, Dr.Sushma Devi, Dr.D.Jayaprada, Dr.Suresh Kumar Mishra

मुक्तिबोध की कविता में प्रतिवादी विमर्श

- डॉ. प्रिया ए.

गजानन माधव मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्ष व्यक्तित्व थे। उन्हें प्रगतिशील कविता और नये कविता के बीच का सेतु माना जाता है। वे तारसप्तक के पहले कवि थे। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी कविता पहली बार "तार सप्तक' के माध्यम से सामने आई। पर उनका कोई स्वतंत्र काव्य-संग्रह उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो पाया।

मुक्तिबोध के लिए कविता और जीवन अभिन्न थे। उनका समस्त साहित्य उस संवेदनशील रचनाकार की मार्मिक अभिव्यक्ति है। उन्होंने अपने युग-यथार्थ का बाह्य एवं आंतरिक दोनों स्तर पर गहराई से महसूस किया था। स्वाधीनता के बाद देश; भ्रष्ट, शोषक और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के दंश को झेल रहा था। मुक्तिबोध की कविता में उस व्यवस्था का असली चेहरा सामने लाया। पूँजीपतियों, राजनीतिज्ञों एवं बुद्धिजीवियों की कूटनीतियों के बीच मध्यवर्ग की उदासीनता जिस संकट को जन्म दे रही थी, मुक्तिबोध का साहित्य उसका विस्तृत वर्णन है। अपनी रचनाओं में वे अभिव्यक्ति के खतरे उठाकर समय के जिरह खडे हुए।

मुक्तिबोध का जीवनकाल अपने देश में पूँजीवाद के विकास का युग था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की औद्योगिक उन्नति को लक्ष्य करके हमारे देश में पूँजीवाद के अनुकूल विकास होने लगा था। पूँजीवादी व्यवस्था के आगामी खतरों से अवगत होकर मुक्तिबोध ने अपने जीवन और साहित्य में इस व्यवस्था का विरोध किया। देश में असमानता को व्याप्त करनेवाली इस कूटनीति से जनसाधारण को बचाना मुशिकल था। वे सत्ताधारी पूँजीपति वर्ग का अत्याचार सहन करने के लिए नामंजूर होते हैं। सत्ताधारी वर्ग के विरुद्ध आक्रोश प्रकट करते हुए वे लिखते हैं-

भूल (आलमगीर)
मेरी आपकी कमज़ोरियों के स्याह

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

भारतीय साहित्य की चिन्तन भूमि

डॉ. संतोष गिरहे
डॉ. निखिलेश यादव

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors
1/11829 Panchsheel Garden, Naveen Shahdara
Delhi-110032, Mob. 9968084132, 9910947941
e-mail: arpublishingco11@gmail.com

ISBN 978-93-88130-15-8

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : + 91 9968084132, + 917982072594
arpublishingco11@gmail.com

BHARTIYA SAHITYA KI CHINTAN BHOOMI
Edited by Dr. Santosh Girhe & Dr. Nikhilesh Yadav

ISBN : 978-93-88130-15-8
Criticism

© सम्पादकद्वय एवं लेखकगण

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : ₹ 675

ले-आउट : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

भारतीयता और राष्ट्रीयता का दृष्टांत

डॉ. प्रिया ए.

भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर हिन्दी की विश्वसनीय उपस्थिति के साथ कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सशक्त रचनात्मकता के लिए मशहूर है। वे इस समय हिन्दी में जीवित सबसे वयोवृद्ध महिला रचनाकार हैं। उनको 2017 में तिरपनवाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। कृष्ण सोबती ने अपनी लम्बी साहित्यिक यात्र में हर नई कृति के साथ अपनी क्षमताओं का अतिक्रमण किया है। उनकी रचनात्मकता ने जो बौद्धिक उत्तेजना, आलोचनात्मक विमर्श, सामाजिक और नैतिक बहसें साहित्य-संसार में पैदा की हैं, उनकी अनुगूँज पाठकों में बराबर बनी रही है।

प्रस्तुत रचना कृष्णा सोबती के आत्मकथा के अंश को उकेरनेवाली है। उपन्यास में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। इस उपन्यास के सभी पात्र काल्पनिक नहीं, वास्तविक हैं। विभाजन की यातना और जमीन से अलग होने की त्रसदियों के बीच अपने युवा दिनों के संघर्ष की दास्तान दर्ज की है। तत्कालीन राजनीतिक हालात, रियासतों के विलय को लेकर उधेड़बुन, रियासतों के आंतरिक संघर्ष और दिल्ली की नई सरकार की पेचीदगियों का बड़े ही रोचक अंदाज में सोबती ने इस उपन्यास में जिक्र किया है। हिंदुस्तान की अस्वतंत्र-गुलामी की हालत, आजादी एवं विभाजन की त्रासदी को उन्होंने अपने जीवन में अनुभव किया था।

'विस्थापन' मनुष्य जीवन की सबसे त्रासद स्थिति है। अपने मूल से उखड़कर दूसरी जगह जाने के लिए विवश होना ही विस्थापन है। विस्थापन के कई कारण हो सकते हैं। कृष्णा सोबती द्वारा रचित 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' में विभाजन और उससे उत्पन्न विस्थापन का दयनीय चित्रण देख सकते हैं। विभाजन, विस्थापन एवं उसके शिकार बनने वाले शरणार्थी को उन्होंने इस प्रकार परिभाषित किया है—शरणार्थी...एक विशेषता। लुटा-पुटा गरीब। कैम्पों में रहनेवाला।

ST. GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक
डॉ. एस. जे. पवार
डॉ. एस. जे. जहागीरदार

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

सौम्य प्रकाशन, विजयपुर

BHAKTI SAHITYA KI PRASANGIKATA

ISBN 978-93-83813-51-3

Publisher : Soumya Prakashan
Mahabaleshawar Colony Darga Road
Vijayapur– 586 103 (Karnataka)

© Publisher

First Edition : 2020
Copies : 1000
Pages : xii + 312 = 324
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-51-3

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
महाबलेश्वर कॉलनी, दर्गा रोड
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2020

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 312 = 324
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

कृष्ण काव्य का सौन्दर्यशास्त्र

• डॉ. प्रिया ए.

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्यों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय जीवन दर्शन में ब्रह्म के साक्षात्कार के लिए अनेक मार्ग स्वीकृत किए गए हैं। ज्ञान, कर्म तथा भक्ति इनमें प्रमुख हैं । कर्म एवं ज्ञानात्मक व्यापारों का सुमधुर फल है - भक्ति। कृष्ण का दिव्य-पावन जीवन जनमानस को बहुत गहरे रूप में आकर्षित करता है। कृष्ण-लीला जन मानस के लिए अधिक अनुरंजनकारी सिद्ध हुई है क्योंकि इसमें दुष्ट-दमन और शिष्ट के साथ-साथ रसिक-रंजन की अनुभूति भी अनुस्यूत रही है। जन साधारण का कृष्ण-चरित्र के प्रति अधिकाधिक अनुराग से ही सूर-साहित्य संवेदनीय एवं मधुर काव्य बना। सूरदास ने श्रीकृष्ण के सगुण रूप का भागवत के आधार पर लीलावर्णन किया था, जिससे जनमानस आनंद में डूब गया था।

कृष्ण काव्य में भगवान कृष्ण के मधुररूप का ही मुख्यतया प्रतिपादन होता है। भक्तशिरोमणि महात्मा सूरदास ने वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित पुष्टिमार्ग में दीक्षित होकर भक्ति-पद्धति का अनुसरण किया था। सूर की भक्तिपद्धति का अनुसंधान उनके पदों से ही किया जा सकता है। सूर की रचना में मुख्य रूप से चार प्रकार के पद मिलते हैं, एक विनय-पद, दूसरा भक्ति संबन्धी पद, तीसरा है शृंगार और चौथा वात्सल्य है। विनय-भक्ति की साधना में वैष्णव संप्रदाय के अनुसार सात भूमिकाएँ स्वीकार की गई है। वे हैं - दीनता, मानमर्षता, भय-दर्शन, भर्त्सना, आश्वासन, मनोराज्य और विचारणा। इन सातों भूमिकाओं को लक्ष्य करके सूर ने पदों की रचना की है। श्रृंगार और वात्सल्य भावों में भक्ति का सुमधुर संचार उन्होंने किया है जिसका सौन्दर्य अनुपम है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

മലയാള നോവൽ സാഹിത്യ ചരിത്രം

2

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

മലയാളത്തിലെ 200 നോവലുകളെ പരിചയപ്പെടുത്തുന്ന ഈ കൃതി നോവലുകൾ വായിച്ചവർക്കും വായിക്കാത്തവർക്കും വായിക്കാനിരിക്കുന്നവർക്കും ഒരുപോലെ പ്രയോജനപ്പെടുന്നതാണ്. 1887 മുതൽ 2018 വരെ മലയാളത്തിൽ പ്രസിദ്ധീകരിക്കപ്പെട്ട നോവലുകളിൽനിന്ന് തിരഞ്ഞെടുത്ത 200 നോവലുകളാണ് ഇവിടെ പരിചയപ്പെടുത്തുന്നത്. ഓരോ നോവലിനെയും സമഗ്രമായി പരിചയപ്പെടുത്തിക്കൊണ്ട് അതിലെ പ്രധാന കഥാപാത്രങ്ങളും നോവൽ സവിശേഷതകളും ഉദ്ധരണികളും പ്രത്യേകം ചേർത്തിട്ടുണ്ട്. എഴുത്തുകാരെക്കുറിച്ചുള്ള വിവരണങ്ങളും നോവൽ സാഹിത്യചരിത്രവും ഉൾക്കൊള്ളിച്ചിട്ടുള്ള ഈ കൃതി ഒരു റഫറൻസ് ഗ്രന്ഥമായും പ്രയോജനപ്പെടുന്നു.

എഡിറ്റർ: ഡോ. എം. എം. ബഷീർ

കവർ ഡിസൈൻ : ഭട്ടതിരി

ഡിസി ബുക്സ്

www.dcbooks.com

റഫറൻസ്

E-book available

₹ 3500 (പുസ്തകം)

MALAYALAM LANGUAGE
Malayala Novel Sahithyamala (vol-2)

REFERENCE
Edited by Dr. M. M. Basheer

Rights Reserved
First Published September 2020

PUBLISHERS
D C Books, Kottayam 686 001
Kerala State, India
Literature News Portal: www.dcbooks.com
Online Bookstore: www.dcbookstore.com
e-bookstore: ebooks.dcbooks.com
Customercare: customercare@dcbooks.com, 9846133336

DISTRIBUTORS
D C Books-Current Books
INDIA

D C BOOKS LIBRARY CATALOGUING IN PUBLICATION DATA
Malayala novel sahithyamala.
3 V., 3008 p; 21cm
ISBN 978-93-5390-670-2
Editor: M. M. Basheer.
1. Malayalam literature. 2. Study. I. Basheer, M. M.
8Mo.09* - dc 22
*(This is local variation of DDC Number for Malayalam literature: Malayala novel sahithyamala.)

No part of this publication may be reproduced, or transmitted in any form or by any means, without prior written permission of the publisher.

ISBN 978-93-5390-670-2

Printed in India
at D C Press, Kottayam, INDIA.

D C BOOKS: THE FIRST INDIAN BOOK PUBLISHING HOUSE TO GET ISO CERTIFICATION

284/20-21-Sl No. 20554-dcb 7509-3750-87633-09-20-se 70-p st-r bm/sr-d ds

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502